

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 3, मार्क 1:14-39

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क की पुस्तक पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह मार्क 1:14-39 पर सत्र 3 है।

नमस्ते, आपके साथ फिर से आकर अच्छा लगा।

जैसा कि हम अब मार्क के सुसमाचार पर अपने तीसरे व्याख्यान को देखते हैं, पिछली बार हमने प्रस्तावना, मार्क अध्याय 1, श्लोक 1 से 13 को देखा था। जैसा कि आपको याद होगा, हमने इस बारे में बात की थी कि कैसे मार्क बहुत ही संक्षिप्त अवधि में बहुत सारी जानकारी प्रस्तुत कर रहा था, लेकिन महत्वपूर्ण तत्व, सुसमाचार की प्रस्तुति एक घोषणा के रूप में कि यीशु, यह बहुत ही खास व्यक्ति, मसीहा, परमेश्वर का पुत्र है। और कैसे जॉन बैपटिस्ट की घोषणा कि यीशु कौन है, उस घोषणा की वास्तविक शुरुआत मानी जाती है।

जॉन द बैपटिस्ट जो कर रहा था, वह बाइबल के शास्त्र में निहित था और उस व्यक्ति के बारे में पूर्वानुमान था जो मार्ग तैयार करेगा। हमने देखा कि जॉन द बैपटिस्ट का बपतिस्मा वह क्षण था जब मंदिर में पर्दे की तरह आकाश अलग हो गया, जिसे हम मार्क 15 में देखते हैं। और परमेश्वर ने यीशु को अपना पुत्र घोषित किया, ऐसे शब्दों में जो आपको दाऊद, मसीहा की याद दिलाते हैं, ग्रंथों, सिंहासनारूढ़ भजनों का उपयोग करते हुए।

इसके अलावा, हालांकि, ईश्वर द्वारा उस घोषणा को, ईश्वर द्वारा उस घोषणा को, यशायाह की सेवक भाषा के साथ जोड़ते हुए, आपके पास मसीहा और पीड़ित सेवक दोनों का यह मिश्रण था, और आत्मा के उतरने के साथ, जिसके पास इसके लिए युगांत संबंधी निहितार्थ थे क्योंकि शास्त्रों ने मसीहा के आने की ओर इशारा किया था जिस पर आत्मा विश्राम करेगी और इस पलायन, नए पलायन के एक नए तरीके से आत्मा का आगमन। हमने इस बारे में भी बात की कि कैसे, प्रस्तावना के साथ, यीशु का अधिकार मौजूद था, और जॉन बैपटिस्ट, यीशु कौन था, इसकी पहली तरह की घोषणा, यह है कि यीशु अधिक शक्तिशाली था। और इसलिए, आपके पास यह पूर्ति का मूल भाव था और साथ ही अधिकार का मूल भाव भी एक साथ आ रहा था।

और मार्क ने यह सब 14 आयतों में किया, बहुत जल्दी, बहुत संक्षेप में। मैं यह इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि अब जब हम मार्क के पहले भाग में प्रवेश कर रहे हैं, तो हम आयत 14 से 45 तक देखेंगे। जब हम प्रस्तावना से बाहर निकलेंगे, तो आपको गति में कुछ बदलाव देखने को मिलेंगे, खासकर जब हम अध्याय 1 में आगे बढ़ेंगे। और आज मेरा लक्ष्य अध्याय 1 को समाप्त करना और यह देखना है कि मार्क क्या कह रहा है। इसलिए, आयत 14 से 20 तक, हमें पहले शिष्यों का आह्वान और मिशन की शुरुआत मिलती है।

हम यहाँ देखते हैं कि यह घटना, समय के अनुसार, मार्क ने जॉन के जेल में जाने के बाद की है। जॉन के जेल में जाने के बाद, यीशु परमेश्वर की खुशखबरी का प्रचार करते हुए गलील में गए। यह दिलचस्प है, अगर आप चाहें, क्योंकि एक, न केवल इस तरह का संक्रमण है कि यीशु की घोषणा कब शुरू होती है, बल्कि यह जॉन के उद्देश्य के अंत से भी जुड़ा है, जो कि समझ में आता है अगर जॉन रास्ता तैयार कर रहा था।

लेकिन ध्यान दें कि मरकुस इस सारांश कथन में क्या कहता है। यीशु परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करते हुए गलील में गया। अब, देखें कि उसने अपना सुसमाचार कैसे शुरू किया।

यीशु मसीहा, परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बारे में खुशखबरी की शुरुआत। क्या आपको समानता दिखती है? यह खुशखबरी की शुरुआत है; यह वही शब्द है, यूंजेलियन, जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बारे में है, अब यीशु के साथ मिलकर परमेश्वर के बारे में खुशखबरी की घोषणा करता है। तो, यहाँ आपके पास मार्क का एक और उदाहरण है जिसमें यीशु के बारे में जो कहा गया है और परमेश्वर के बारे में जो कहा गया है, वह मेल खाता है।

यीशु परमेश्वर के महान आगमन, परमेश्वर की महान विजय की घोषणा कर रहे हैं। यही उस शुभ समाचार भाषा का सार था। हमने इस बारे में बात की है।

फिर, श्लोक 15 में, हमें क्रियात्मक परिभाषा मिलती है: समय आ गया है। यह युगांतशास्त्रीय भाषा है।

अब कुछ महत्वपूर्ण घटित हो चुका है, जिसकी आशा की जा चुकी थी। समय आ गया है। परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।

परमेश्वर के राज्य का यह विचार यीशु की शिक्षा का केंद्र है। और परमेश्वर का राज्य, परमेश्वर की संप्रभुता, परमेश्वर का शासन, अब निकट आ गया है। दूसरे शब्दों में, मसीहाई युग के लिए प्रत्याशित समय आ गया है।

दूसरे शब्दों में, राज्य आ गया है। पश्चाताप करो और खुशखबरी पर विश्वास करो। यह स्पष्ट रूप से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ जुड़ा हुआ है, जो वह कह रहा था।

पश्चाताप करो और खुशखबरी पर विश्वास करो। खुशखबरी क्या है? खुशखबरी परमेश्वर की खुशखबरी है। अच्छा, परमेश्वर की खुशखबरी क्या है? यीशु की खुशखबरी।

आप देख रहे हैं कि यह कैसे काम कर रहा है। और हम कैसे जानते हैं कि राज्य निकट आ गया है? खैर, राजा निकट आ गया है। जहाँ राजा है, वहाँ राज्य है।

हम देखेंगे कि महत्वपूर्ण आगमन क्या रहा है, वह महत्वपूर्ण क्षण क्या रहा है जिसने इस बार को पिछले समय से अलग बना दिया है? यह यीशु की उपस्थिति है। स्वर्ग के फटने और घोषणा के साथ यीशु की उपस्थिति, पूर्णता के साथ यीशु की उपस्थिति, पुराने नियम की भविष्यवाणियों की

पूर्ति के साथ यीशु की उपस्थिति, जैसा कि यूहन्ना ने संकेत किया है, यीशु की उपस्थिति, यही वह है जो बदल गया है। यीशु का आगमन ही वह है जो बदल गया है।

यह नई बात है। इसका मतलब है कि यीशु का आगमन परमेश्वर के राज्य के निकट आ गया है। और यीशु इसकी घोषणा कर रहे हैं।

इसलिए, पहले मिशन के इस तरह के सारांश कथन में भी यह दिलचस्प है कि परमेश्वर के बारे में सुसमाचार की विषय-वस्तु यीशु है। बेशक, यहाँ जॉन बैपटिस्ट का बाकी हिस्सा थोड़ा सा संकेत देता है, अगर आप चाहें, तो यह कि परमेश्वर के सुसमाचार के आगमन का मतलब दुख और कठिनाई का अभाव नहीं है। कि यीशु का आगमन हमेशा गीतों और गुलाबों से नहीं होने वाला है।

लेकिन यहाँ, यह पहले से ही यूहन्ना के बाकी हिस्सों के साथ जुड़ा हुआ है। तो, हम इस पर काम करते हैं, और हमें एक तस्वीर मिलती है कि यीशु क्या कर रहा है। यीशु गलील की झील के किनारे चले।

भौगोलिक दृष्टि से देखें, पद 14 में यीशु गलील में गया, पद 16 में वह गलील की झील के किनारे चल रहा है। और, बेशक, सारांश कथन जो हमने अभी पढ़ा। एक बात ध्यान देने योग्य है, इस क्षेत्र में चलना खतरनाक हो सकता था।

यह क्षेत्र हमेशा उस समय होने वाली राजनीति के साथ मैत्रीपूर्ण क्षेत्र नहीं रहा होगा। इसलिए, इसका एक संकेत और सूत्र भी है। हम थोड़ी बात करने जा रहे हैं जब हम जॉन बैपटिस्ट की गिरफ्तारी के पीछे की राजनीति और उस समय वहाँ क्या हो रहा था, जिसके बारे में हम बात करेंगे।

और यहाँ तक कि यीशु से जो प्रश्न पूछे जाते हैं, वे कहाँ पूछे जाते हैं, यह भी महत्वपूर्ण है। सिर्फ यह नहीं कि कौन पूछ रहा है। हम देखेंगे कि स्थान भी महत्वपूर्ण है।

यहाँ हम पाते हैं कि वह समुद्र के किनारे चल रहा है और हमें दो बुलावों का पहला समूह मिलता है। यहाँ शिष्यों के बुलावे की तस्वीर है जो भाइयों के दो समूहों के रूप में शुरू होती है। हमारे पास साइमन और एंड्रयू हैं, और फिर, निश्चित रूप से, हमारे पास जेम्स और जॉन हैं।

और ये चार बहुत महत्वपूर्ण हैं। जब हम इन चारों को देखते हैं, तो भाइयों के ये दो समूह, अगर आप चाहें तो, एक मुख्य समूह हैं। हालाँकि, वास्तव में, निष्पक्ष रूप से कहें तो यह एक बड़ा तीन-प्लस एक जैसा है।

हमें हमेशा एंड्रयू के लिए बुरा लगता है। एंड्रयू को बड़े चार में से एक चुना गया है, लेकिन अक्सर, उसे छोड़ दिया जाता है, जबकि अन्य तीन को जाकर अनोखी और अद्भुत चीजें देखने को मिलती हैं। लेकिन इन चारों के बारे में कुछ ऐसा है जो महत्वपूर्ण है, ये दो भाई।

और, बेशक, यहाँ हमारे पास यह महान उद्घोषक है। हमें यीशु के बारे में यह सब उच्च भाषा सुनने को मिल रही है। अब, एक सामान्य जगह पर, आम लोगों को बुलाना।

लेकिन मेरी बात को गलत मत समझिए। आम लोगों का मतलब मूर्ख नहीं होता। इसका मतलब मूर्ख नहीं होता।

मछुआरा बनना एक व्यवसाय चलाने जैसा था। यह न केवल कठिन काम था, बल्कि इसके लिए बुद्धिमत्ता की भी बहुत आवश्यकता थी। और मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं अक्सर सोचता हूँ कि हम प्रारंभिक चर्च के जन्म को ऐसे लोगों से जोड़ते हैं जो स्पष्ट रूप से सोचने में असमर्थ थे और केवल भोले-भाले थे।

ऐसा नहीं था, लेकिन वे आम थे। वे एक व्यापार कर रहे थे। अगर आप कहें तो चर्च एक जमीनी स्तर का आंदोलन था।

मार्क में हम पहले ही अप्रत्याशित घटनाओं को देख चुके हैं। हमने देखा है कि यीशु में एक शक्तिशाली व्यक्ति का बपतिस्मा हुआ, बपतिस्मा के समय घोषित व्यक्ति जंगल में गया, तथा चर्च के भविष्य के महान नेता आम लोगों से आए। यहाँ से, इस बिंदु से लेकर गेथसेमनी तक, यीशु अपने शिष्यों के साथ होगा।

मुझे लगता है कि यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यीशु के त्याग की भी बात करता है। यहाँ पहले चार स्पष्ट रूप से केंद्र में हैं। मुझे यह पसंद है कि यह दो भाइयों की जोड़ी की कहानी है।

मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है कि परमेश्वर के नए लोगों का हिस्सा बनने के लिए मसीह का आह्वान कभी-कभी व्यक्तिगत परिवारों को भी ध्यान में रखता है। यहाँ हमारे पास दो मुख्य भाई हैं। यहाँ सबसे पहले साइमन का उल्लेख किया गया है।

शायद यह इस बात का संकेत है कि शमौन अपने भाई अन्द्रियास को जाल डालने में क्या भूमिका निभाएगा। वे मछुआरे थे। यीशु ने कहा, "आओ, मेरे पीछे आओ," और मैं तुम्हें लोगों को पकड़ने के लिए भेजूँगा।

"मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊँगा।" और फिर श्लोक 18, "वे तुरन्त अपने जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए।" मार्क के लिए ध्यान दें कि वह जो वर्णन करना चाहता है वह संसाधित नहीं है। आपके पास कोई लंबी बातचीत नहीं है। आपके पास पुकारने के कई क्षण नहीं हैं।

आपके पास एक सारांश कथन है। और मुख्य बात यह है कि उन्होंने अपने जाल छोड़ दिए और उनका अनुसरण किया, कि मसीह के शब्द प्रभावशाली हैं, कि वे कार्रवाई का कारण बनते हैं। ध्यान दें, हमें विश्वास, शिष्यत्व, अनुसरण की एक मज़बूत गवाही का यह संकेत भी मिलता है।

हम मार्क में इसे बार-बार देखेंगे, जहाँ कोई व्यक्ति यीशु की ओर झुकाव रखता है, और यीशु विभिन्न तरीकों से स्थिति को दबाते हैं, जिसके लिए वास्तव में विश्वास की पुष्टि करने, शिष्यत्व की पुष्टि करने, अनुसरण की पुष्टि करने के लिए एक शारीरिक कार्य की आवश्यकता होती है। और

हम इसे यहाँ देखते हैं। और, ज़ाहिर है, यीशु जो कर रहे हैं उसका हिस्सा बनने के लिए पीछे छोड़ना है।

अब, एक दिलचस्प बात यह है कि, अगर आप जानते हैं कि इस समय अवधि में आम तौर पर क्या होता है, शिक्षक, रब्बी, शिष्यों की तलाश में नहीं जाते थे। शिष्य रब्बियों की तलाश में जाते थे। यदि आप एक रब्बी, एक शिक्षक होते, तो लोग आपके पास आते, आप उनके पास नहीं जाते।

कई मायनों में, यीशु यहाँ जो कर रहे हैं वह बहुत हद तक वैसा ही है जैसा भविष्यवक्ता तब करते थे जब वे बाहर जाते थे। और मुझे लगता है कि यह यीशु की सक्रियता को भी दर्शाता है। इससे मेरा मतलब है कि यीशु अपने शिष्यों का चयन सक्रियता से कर रहे हैं, कि यीशु में चुनाव का एक तत्व है, एक पहल है जो यीशु प्रदर्शित कर रहे हैं, न कि केवल निष्क्रियता।

इससे शिष्यों और भीड़ के बीच थोड़ी दूरी हो जाएगी, जहाँ भीड़ कुछ हद तक चकित हो जाएगी, लेकिन यीशु का अपने शिष्यों के प्रति विशेष ध्यान है। हम पद 19 और 20 में भी इसी तरह का पैटर्न देखते हैं। जब वह थोड़ा आगे बढ़ा, तो उसने देखा कि ज़ेबेदी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना नाव में बिना देर किए अपने जाल तैयार कर रहे हैं।

फिर से, ध्यान दें कि यह मार्क से कैसे है, बिना देरी के, तुरंत, बस उसी समय, उसी समय। बिना देरी किए, उसने उन्हें बुलाया। पहले की तरह, उन्होंने अपने पिता, ज़ेबेदी को मज़दूरों और नौकरों के साथ नाव में छोड़ दिया और उसके पीछे चले गए।

मुझे लगता है कि यह शिष्यों के संग्रह में पहले से ही काम कर रही विविधता की एक आकर्षक झलक है। कुछ समानताएँ हैं। वे एक ही क्षेत्र से हैं।

वे एक ही पेशा कर रहे हैं। वे मछुआरे हैं। लेकिन ध्यान दें कि एक समूह ऐसे व्यवसाय से आ रहा है जिसने मदद के लिए लोगों को काम पर रखा था, जबकि दूसरा समूह ऐसा नहीं कर रहा है।

तो, एक समूह दूसरे समूह की तुलना में अधिक समृद्ध पृष्ठभूमि से आ रहा है। मुझे लगता है कि ज़ेबेदी द्वारा वहन किए जा सकने वाले किराए के सहायकों, श्रमिकों का थोड़ा सा हिस्सा हमें कुछ बताता है। बेशक, फिर से, समानता यह थी कि यीशु ने बुलाया, और तुरंत, उन्होंने जवाब दिया।

यहाँ एक प्रस्तुति है, एक जोर, मुझे लगता है, यीशु के अधिकार का। अब हम उस दिन पर आते हैं जो किसी भी अन्य दिन से अलग है, कफरनहूम का दिन, जीवन का दिन, अगर आप चाहें तो, यीशु कौन है, श्लोक 21 से 39 के साथ। मैं यहाँ इस अंश के माध्यम से चलना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह मार्क जो कर रहा है उसके बारे में बहुत जानकारीपूर्ण है।

हम पद 21 से थोड़ा शुरू करेंगे। वे कफरनहूम गए, और जब सब्त का दिन आया, तो यीशु आराधनालय में गया और सिखाने लगा। अब, उस विशेष पद में पहले से ही बहुत सारी जानकारी है।

सबसे पहले, उस समय आराधनालय की संरचना एक खुले भाषण, ओपन माइक नाइट नहीं थी, आओ, जो चाहो कहो, जब चाहो। दूसरे शब्दों में, आप उठकर बोल नहीं सकते थे। आपको बुजुर्गों द्वारा पहचाना जाएगा, आराधनालय के बुजुर्ग किसी ऐसे व्यक्ति को पहचानेंगे जो पवित्रशास्त्र, बाइबिल के अंश पर एक अच्छा टिप्पणीकार, एक अच्छा व्याख्याकार होने की प्रतिष्ठा रखता है, उन्हें आने और पढ़े जा रहे अंश पर बोलने के लिए आमंत्रित करेंगे।

तो, दूसरे शब्दों में, यीशु को बोलने के लिए आमंत्रित करने के लिए पहले से ही अपनी प्रतिष्ठा को साथ लेकर चलना पड़ा। और, यह ऐसी स्थिति नहीं थी कि आप बस जो भी पाठ इस्तेमाल करना चाहते थे, उसे लेकर खड़े हो जाते। स्कॉल पढ़ा जाता, और फिर आप स्कॉल पर टिप्पणी करते। तो, वहाँ एक अपेक्षित ज्ञान था।

और इसलिए, मुझे लगता है कि यह थोड़ा सा भी कहता है कि यीशु ने सिखाना शुरू किया, कि पहले से ही एक मान्यता काम कर रही थी। लेकिन उसकी प्रतिक्रिया पर ध्यान दें, तो वह सिखा रहा है, श्लोक 22, लोग उसकी शिक्षा पर आश्चर्यचकित थे क्योंकि उसने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में सिखाया जिसके पास अधिकार था, न कि कानून के शिक्षकों के रूप में। हम मार्क के अपने अध्ययन में तीन समूहों, शिष्यों, भीड़ और विरोधियों पर नज़र रखने जा रहे हैं।

और, उनकी अलग-अलग विशेषताओं को देखते हुए, कई बार, वे एक साथ मिल जाते हैं। यहाँ हमें दो समूहों का परिचय मिलता है। एक है भीड़, अगर आप चाहें तो; यह आराधनालय में मौजूद लोग होंगे और मार्क की उनकी विशेषताओं में से एक यह है कि वे चकित होते हैं।

वे यीशु के कामों से चकित हैं। विस्मय की एक विशेषता है। अब, हम देखेंगे कि विस्मय का अर्थ अनुसरण और शिष्यत्व नहीं है; इसके बजाय, वे चकित हैं।

और वे क्यों चकित हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु अधिकार के साथ बोल रहे हैं। और यह यहीं खत्म नहीं होता। वे चकित नहीं हैं, ध्यान दें, वे इस बात से चकित नहीं हैं कि यीशु के बोलने के तरीके में अधिकार है, बल्कि उनके पास शास्त्रियों से अलग अधिकार है।

अब, याद रखें, कानून के शिक्षक, शास्त्री और आराधनालय वहीं थे जहाँ उन्हें अधिकार था। यही उनका क्षेत्र था। यहीं पर उन्हें यह समझाने के लिए बुलाया जाता था कि शास्त्रों का क्या अर्थ है, उन्हें कैसे लागू किया जाए, उनकी व्याख्या कैसे की जाए, वे किस बारे में बात कर रहे थे, और वे विवादों या बहसों को कहाँ संभालेंगे।

वे मान्यता प्राप्त अधिकारी थे। और फिर भी, जब यीशु उनके बीच में शिक्षा दे रहा था, तो भीड़, वहाँ मौजूद लोग, यीशु के अधिकार को समझने के लिए, इसकी तुलना व्यवस्था के शिक्षकों और उनके पास इसकी कमी से करते थे। यह केवल इसलिए नहीं था कि यीशु के पास अधिक अधिकार था, बल्कि यह कि शास्त्रियों के पास वास्तव में उनके शिक्षण में अधिकार की कितनी कमी थी।

तो, हमारे पास जॉन बैपटिस्ट के साथ वह पहला विरोधाभास था, जहाँ वह एक महान व्यक्ति था, यह प्रत्याशित व्यक्ति जो घोषणा करता है, यीशु मुझसे अधिक शक्तिशाली है। अब, हमारे पास

आराधनालय में एक और तुलना की जा रही है, फिर भी, शास्त्र की शिक्षा पर। यह यीशु का अधिकार है जो मजबूत विरोधाभास में खड़ा है, जिसका अर्थ है कि हमारे पास कानून के शिक्षकों और यीशु के अधिकार और यीशु की शिक्षा के बीच संघर्ष का संकेत है।

वे पहले से ही एक दूसरे के खिलाफ़ पेश किए जा रहे हैं। अब, हमें जो सवाल पूछना है, वह यह है कि किस अर्थ में यीशु अपनी शिक्षाओं में शास्त्रियों से ज़्यादा अधिकारपूर्ण थे? मार्क यहाँ इसका सीधा उत्तर नहीं देता है। जब हम सुसमाचार में आगे बढ़ेंगे तो वह इस सवाल का जवाब देगा।

लेकिन, इसकी प्रत्याशा में, मैं सुझाव दे सकता हूँ कि हम निम्नलिखित के बारे में सोचें। जब शास्त्री शास्त्र पर शिक्षा देते थे, तो अक्सर कभी-कभी कुछ चर्चा होती थी, किसी विशेष शिक्षा का अनुप्रयोग क्या था, किसी शिक्षा या शास्त्र का क्या अर्थ था, इस पर कुछ बहस होती थी। हम पाएंगे कि, कभी-कभी, यीशु अपनी शिक्षा में ऐसा करते थे।

हम एक पाठ के अनुप्रयोग के बारे में बात करेंगे। लेकिन, अक्सर मार्क में, वह ईश्वरीय इरादे, एक मार्ग के कारण के बारे में बात करता है। यह इस कारण से दिया गया था, इस वजह से।

दूसरे शब्दों में, एक दिव्य दृष्टिकोण, यह सवाल नहीं है कि क्या यह यहाँ लागू होता है, या यह क्या है, या वह कैसे है? बल्कि, लगभग एक घोषणा है कि, यह इसी के लिए था। एक स्थिति जो दिव्य, उस ईश्वर के पास होगी। हम इसके संकेत देखेंगे।

हम इस पर चर्चा करेंगे। लेकिन, मैं यहाँ सुझाव देता हूँ कि यहाँ यीशु की शिक्षाओं में उनके अधिकार के बारे में कुछ ठोस बात है जो सिर्फ़ आत्मविश्वास, निर्भीक भाषण और भाषा की शुद्धता से कहीं बढ़कर है। हम आगे बढ़ते हैं, तो हम यहाँ आराधनालय में हैं।

और, तभी, उनके आराधनालय में एक व्यक्ति जो अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त था, चिल्लाया। अब, यहाँ तक कि थोड़ा आश्चर्य भी है कि आराधनालय में एक व्यक्ति है जो प्रेतग्रस्त है। हमें इस पर ज़्यादा टिप्पणी नहीं दी गई है, लेकिन हम देखेंगे कि जब हम मार्क के सुसमाचार में अन्यत्र राक्षसों को देखते हैं, तो वे अक्सर उन स्थानों से जुड़े होते हैं जो अशुद्ध या अपवित्र होते हैं।

तो, शायद हमें इस बात का संकेत भी मिल रहा है कि आराधनालय में कुछ वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए था। मैं इस पर बहुत ज़्यादा ज़ोर नहीं देना चाहता, लेकिन मुझे लगता है कि आश्चर्य को ध्यान में रखना उचित है। यहाँ, हम अगली विशेषता भी देखते हैं जो गैलीलियन मंत्रालय का एक बड़ा हिस्सा होगी।

पहला था शिक्षण। अगला गुण भूत-प्रेत भगाना है। और यहाँ हमारे पास राक्षस चिल्ला रहा है।

वे आम तौर पर चीखते-चिल्लाते रहते हैं। मार्क के सुसमाचार में राक्षस आम तौर पर चीखते-चिल्लाते रहते हैं। उनके बारे में एक अराजक भावना है।

और यह इस प्रश्न से शुरू होता है, श्लोक 24: हे यीशु नासरत के, तू हमसे क्या चाहता है? अब, यही है जो तू हमसे चाहता है: अलग-अलग अनुवादों में, अलग-अलग तरीकों से अनुवादित।

आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि यह एक ग्रीक मुहावरे से निपट रहा है, जिसका अनुवाद करना हमेशा कठिन होता है, लेकिन मुहावरे का अर्थ हमेशा अलगाव का होता है। तुम एक तरफ हो, मैं दूसरी तरफ हूँ।

तो, इसमें हमेशा इसका संकेत रहता है। और ध्यान दें कि इसमें कुछ बातें दिलचस्प हैं। एक यह है कि आप हमसे क्या चाहते हैं? हम का बहुवचन।

यह एक ही राक्षस है जो एक ही आदमी के अंदर बोल रहा है। यह राक्षस है जो अपने सही दिमाग वाले आदमी से ज़्यादा बोल रहा है। और वह कहता है, तुम हमसे क्या चाहते हो? और मुझे लगता है कि आध्यात्मिक प्राणियों, विशेष रूप से अशुद्ध आत्माओं के साथ व्यवहार करते समय बहुवचन और एकवचन बहुवचन के आदान-प्रदान का कारण असामान्य नहीं है।

हम देखेंगे कि यह फिर से सामने आएगा। लेकिन मुझे लगता है कि बहुवचन का कारण, आप मुझसे क्या चाहते हैं, इसके बजाय यह है कि आप हमसे क्या चाहते हैं, यह विचार है कि वह लगभग एक बड़े समूह की ओर से बोल रहा है। नासरत के यीशु, आप हमसे क्या चाहते हैं? फिर से, यह एक तरह से सता रहा है कि यीशु कहाँ से हैं।

क्या तुम हमें नष्ट करने आए हो? ध्यान दें कि यह एक पैटर्न है जिसे हम देखेंगे, यह दुष्टात्माओं द्वारा, यीशु की अशुद्ध आत्माओं द्वारा मान्यता है, कि उनके पास एक पहचान है और यह पहचान उनके विनाश के साथ जुड़ी हुई है। कोई लड़ाई नहीं है, कोई खतरा नहीं है। यह एक तरह की मान्यता है, अधिकार और शक्ति की तत्काल मान्यता।

क्या तुम उसका नाश करने आए हो? मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो, परमेश्वर के पवित्र जन। अब, परमेश्वर का पवित्र जन एक सामान्य क्राइस्टोलॉजिकल शीर्षक नहीं है जिसका उपयोग मार्क करता है या नए नियम में कहीं और पाया जाता है, जो मुझे लगता है कि इसके ऐतिहासिक पहलू को दर्शाता है, कि यह परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य का पुत्र नहीं है। यह परमेश्वर का पवित्र जन है, जो एक सामान्य उपयोग नहीं है।

मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो, परमेश्वर के पवित्र जन। और फिर हम पद 25 में देखते हैं कि यीशु क्या कहते हैं। वह दो बातें कहता है, चुप हो जाओ, उसमें से बाहर निकल आओ।

परिणामस्वरूप, दुष्ट आत्मा ने उस आदमी को हिंसक रूप से हिला दिया। मार्क के सुसमाचार में हम जो कुछ देखेंगे, वह यह है कि दुष्टात्माएँ उस जगह को नुकसान पहुँचाना और अराजकता फैलाना चाहती हैं, जहाँ वे हैं, चाहे वे लोग हों या जानवर, वे खुद को घाव पहुँचाते हैं। दुष्ट आत्मा ने उस आदमी को हिंसक रूप से हिलाया और एक चीख के साथ उसमें से बाहर निकल गई।

और यह स्पष्ट नहीं है कि वास्तव में वहाँ चीखने-चिल्लाने का काम कौन कर रहा है। लेकिन फिर से, तात्कालिकता पर ध्यान दें। तो, शिष्यों के आह्वान में जो हुआ और भूत-प्रेत भगाने में जो हुआ, उसके बीच यहाँ एक समानता है।

यीशु ने कहा, मेरे पीछे आओ। वे तुरंत मेरे पीछे चले गए। यीशु ने कहा, और ऐसा हुआ।

उससे बाहर निकल जाओ। वह तुरन्त चला गया। यीशु बोलता है, ऐसा होता है।

यहाँ इस अधिकारपूर्ण आवाज़, आदेश देने की इस क्षमता और जो वह आदेश देता है, के बीच समानता है। लोग बहुत आश्चर्यचकित थे। फिर से, विस्मय की यह भाषा।

लोग इतने आश्चर्यचकित थे कि उन्होंने एक दूसरे से पूछा, यह क्या है? एक नई शिक्षा और अधिकार के साथ। वह दुष्टात्माओं को भी आदेश देता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं। तो, ध्यान दें कि मार्क यहाँ पहले से ही क्या कर रहा है।

हम पहले दो दर्जन छंदों के लिए तेज़ गति से आगे बढ़ रहे थे, सिर्फ़ 20 छंदों तक। और अब हम नाटकीय रूप से धीमे हो गए हैं। हम उद्धरण प्राप्त कर रहे हैं।

हम बातचीत कर रहे हैं। हम विचार प्राप्त कर रहे हैं। हम एक बहुत ही विशिष्ट समय बिंदु पर, एक बहुत ही विशिष्ट स्थान पर बहुत सारा डेटा प्राप्त कर रहे हैं।

और इस बात पर ज़ोर दिया जा रहा है कि यीशु शक्तिशाली हैं। वे अपनी शिक्षाओं में, बोलने के कार्य में शक्तिशाली हैं। वे अपने भूत-प्रेत भगाने के कार्य में शक्तिशाली हैं।

अब, पहला प्रतिद्वंद्वी, अगर आपको पिछली बार याद हो जब हम साथ थे, तो यीशु के सामने पहला प्रतिद्वंद्वी शैतान था, शैतान ने उसे लुभाया था। और यहाँ हमारे पास भूत-प्रेत भगाने के साथ उस प्रतिद्वंद्वी का विस्तार है। और मार्क ने जो स्पष्ट किया है वह यह है कि यह वास्तव में कोई प्रतियोगिता नहीं है।

यह कोई बहुत बड़ी लड़ाई नहीं थी जो फिल्मों में विशेष प्रभावों के लिए की गई थी। यह बस एक शब्द, एक फटकार और एक प्रतिक्रिया थी। अब, श्लोक 28 में, उसके बारे में खबर तेज़ी से फैली, जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, गलील के पूरे क्षेत्र में।

फिर, वे आश्चर्यचकित थे। यह एक सार्वजनिक कार्य था। यह एक सार्वजनिक कार्य था जो घटित हुआ था।

यह सब आराधनालय में हुआ, इसलिए स्वाभाविक रूप से यह बात फैल गई। लोगों को लगा कि शहर में आशा की किरण जगी है, कि कुछ अद्भुत काम हो रहा है। जैसे ही वे आराधनालय से बाहर निकले, उसी दिन, वे याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर गए।

तो, साइमन का यहाँ घर है, या उसके परिवार का यहाँ घर है। यह एक आधार है, एक स्थान है। साइमन की सास बुखार के कारण बिस्तर पर थी, इसलिए अब हम फिर से उसी परिदृश्य में आ गए हैं।

कुछ ऐसा है जो गलत है, और यहाँ यीशु की उपस्थिति उसमें आ जाती है। एक आदमी है जो भूत-प्रेत से ग्रसित था। यीशु बोलते हैं, और बात खत्म हो जाती है।

ऐसे लोग थे जो यीशु का अनुसरण करने के अलावा कुछ और कर रहे थे। यीशु बोलते हैं, और अब वे यीशु का अनुसरण कर रहे हैं। यहाँ हम शमौन की सास को बुखार से पीड़ित बिस्तर पर लेटे हुए देखते हैं।

तुरंत, उन्होंने यीशु को उसके बारे में बताया, जैसा कि आप उम्मीद कर सकते हैं। इसलिए, वह उसके पास गया, उसका हाथ पकड़ा, और उसे उठने में मदद की। उसका बुखार उतर गया, और वह उनकी सेवा करने लगी।

मुझे लगता है कि इसके कुछ दिलचस्प पहलू हैं। सबसे पहले, यह एक निजी कार्यक्रम है, जबकि भूत-प्रेत भगाने का काम बहुत सार्वजनिक था।

यह एक घर में हो रहा है। वास्तव में, यह शायद कुछ ऐसा है जो पीटर को अच्छी तरह से पता था। यह उसके घर में उसकी सास के साथ हुआ था।

अगर मार्क पीटर के साथ काम कर रहा है, तो यह उस संभावना का सबूत होगा। हमारे पास चार लोग हैं, जेम्स, जॉन, साइमन, एंड्रयू, वे चार जिनके बारे में हम बात कर रहे थे। यह एक दिलचस्प, मुझे लगता है कि आकर्षक, सुंदर विरोधाभास है।

जब यीशु भूत-प्रेत भगाने का काम कर रहा था, तो उसने सख्ती से कहा, चुप हो जाओ। बाहर आ जाओ।

ध्यान दें कि वह साइमन की सास के साथ कैसा व्यवहार करता है। वह उसका हाथ थामता है और उसे उठने में मदद करता है। वह बुखार को नहीं डांटता।

वह बुखार से नहीं कहता कि बाहर निकल जाओ। यहाँ भूत भगाने और बीमारी के बीच स्पष्ट अंतर है। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि हम अक्सर सुनते हैं कि प्राचीन दुनिया में बीमारियाँ, शारीरिक बीमारियाँ, भावनात्मक बीमारियाँ, मानसिक बीमारियाँ, भूत-प्रेत के कब्जे से जुड़ी होती थीं।

यह कथन अपने आप में असत्य नहीं है और न ही यह कोई झूठा कथन है। ऐसे संबंध थे। लेकिन यह कहना वैसा नहीं है जैसे यह कहना कि यीशु अंतर को देखने में असमर्थ थे।

दूसरे शब्दों में, यीशु, मुझे विश्वास है कि यीशु और मार्क और यहाँ उनके सुसमाचार ने, राक्षसी कब्जे और बीमारी के बीच के अंतर को समझा। यहाँ प्रेम और करुणा का कार्य भी है। वह साइमन की सास के साथ कोमलता से पेश आता है।

अधिकारपूर्ण व्यक्ति कोमल है। वह उसका हाथ पकड़ता है, उसे छूता है, उसे उठने में मदद करता है। लेकिन ध्यान दें कि क्या होता है।

बुखार उतर गया और वह उन पर प्रतीक्षा करने लगी। यह तत्काल प्रभाव है। यह उन उदाहरणों में से एक है कि मसीह की उपस्थिति में, पतन, बीमारी, मृत्यु, बीमारी के परिणाम पूर्ववत् हो रहे हैं।

बुखार तुरंत चला गया। जैसा कि हमने देखा है कि मार्क ने शिष्यों के तुरंत पीछे आने, भूत भगाने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया है, अब हम देखते हैं कि महिला तुरंत उठ गई और उसे बुखार का कोई भी असर नहीं हुआ। उसने उनकी सेवा की।

मुझे लगता है कि मार्क हमें बताता है कि वह उन पर भरोसा करने लगी ताकि वह उस महिला को अपनी पूरी ताकत दे सके जो अब उसके पास थी। वह उन पर भरोसा कर सकती थी। उस शाम सूर्यास्त के बाद, लोग यीशु के पास सभी बीमार और दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को लेकर आए।

अब आप पूछ रहे होंगे कि शाम क्यों? यह सब्त का दिन था। उन्हें बीमारों और दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को यीशु के पास लाने की अनुमति नहीं थी। इसलिए, मार्क में होने वाली यह पहली चंगाई बहुत ही निजी है।

लेकिन अब बेशक खबर फैल चुकी है, शाम हो चुकी है, इसलिए लोग अब सब्त के दिन की व्याख्या के अनुसार यात्रा करने में सक्षम हैं। पूरा शहर दरवाजे पर इकट्ठा होता है। आयत 34 में ध्यान दें, यीशु ने कई लोगों को चंगा किया जो विभिन्न बीमारियों से पीड़ित थे।

उसने बहुत से दुष्टात्माओं को भी बाहर निकाला। तो, फिर से वही अंतर है। उसने चंगा किया, और दुष्टात्माओं को भी बाहर निकाला।

उन्हें दो अलग-अलग श्रेणियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेकिन उसने दानव को बोलने नहीं दिया क्योंकि वे जानते थे कि वह कौन है। हमने इसे आराधनालय में भूत भगाने के दौरान देखा जब दानव कहता है, मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो, परमेश्वर के पवित्र जन।

यीशु कहते हैं, चुप रहो, चुप रहो। वह उन्हें बोलने नहीं देता। बेशक, सवाल यह है कि वह उन्हें बोलने क्यों नहीं देता? ध्यान रखें, एक बात यह है कि यह कोई जादुई उपकरण नहीं है।

दूसरे शब्दों में, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यीशु उन्हें बोलने की अनुमति नहीं देते क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति देकर, वे किसी प्रकार का जादुई मंत्र बोल सकते हैं और इस प्रकार यीशु पर शक्ति प्राप्त कर सकते हैं, और वह इसे रोकने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि यहाँ ऐसा कुछ हो रहा है। मुझे लगता है कि एक बात यह है कि यीशु ने अपवित्र और शैतानी बातों के बारे में बात करने और यह घोषित करने और दावा करने से इनकार कर दिया है कि वह कौन हैं, और वह इसकी अनुमति नहीं देंगे।

इसके अलावा, यह भावना भी है कि जब यीशु अपने बारे में लोगों को बताने की कोशिश कर रहे हैं कि वे कौन हैं, तो वे नियंत्रण में हैं। जब अशुद्ध आत्माएँ उन्हें बताती हैं कि वे कौन हैं, तो इससे उनका नियंत्रण कुछ हद तक खत्म हो जाता है। कुछ जगहों पर, वे अपनी लोकप्रियता के प्रसार को नियंत्रित करने के बारे में बहुत सावधान हैं।

कि वह अचानक राजनीतिक घोषणाओं के जाल में नहीं फंस जाएगा। कि अब ऐसे लोग नहीं होंगे जो कह रहे हैं, देखो, राक्षसों की भी सुनो। राक्षस घोषणा करते हैं कि वह कौन है।

वह अवश्य ही वहाँ पहुँच गया है। मेरा संदेह है कि वह राजनीतिक उत्साह को कम करने की कोशिश कर रहा है। क्योंकि हम अक्सर देखते हैं कि यहूदी देशों में लोगों को चुप कराया जाता है, यीशु सक्रिय रूप से लोगों को चुप कराते हैं।

वह गैर-यहूदी या गैर-यहूदी द्वारा संचालित क्षेत्रों में लोगों को चुप कराने में कम सक्रिय है, जो शायद उसमें भूमिका निभा सकता है। लेकिन फिर भी, यहाँ एक अधिकार है। वह दुष्टात्माओं को बोलने से रोकने में सक्षम है, कि वह ऐसा नहीं करेगा।

तो, आपको इस दिन की यह तस्वीर देखने को मिलती है। वह इस आराधनालय में है, वह विस्मयकारी उपदेश दे रहा है, अधिकारपूर्ण शिक्षा दे रहा है। भूत-प्रेत भगाने के बीच में, विस्मयकारी।

निजी उपचार, तत्काल बहाली। पूरा शहर आ रहा है। और वह क्या कर रहा है? वह उपचार कर रहा है।

वह दुष्टात्माओं को निकाल रहा है। यह एक अविश्वसनीय क्षण की तरह लग रहा होगा। शायद यह ऐसा ही रहा होगा। मैं कल्पना करता हूँ कि शमौन पतरस, शमौन, पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यहून्ना सोच रहे होंगे कि अब यह सब शुरू हो रहा है।

कि भीड़ आ रही है और चीजें घटित होने लगी हैं। आयत 35 पर ध्यान दें, सुबह-सुबह, जब अंधेरा था, यीशु उठे, घर से बाहर निकले और एकांत स्थान पर चले गए। इसलिए, वह एक समय पर उठे ताकि गायब हो जाएँ, अकेले रहें, जहाँ उन्होंने प्रार्थना की।

यीशु का प्रार्थना करने के लिए जाना कुछ ऐसा है जिस पर हम मार्क के सुसमाचार में वापस आने वाले हैं। इतना कि शमौन और उसके साथी उसे खोजने गए। आप आयत 36 में जो समझ सकते हैं वह यह है कि शक्ति का यह बहुत ही सार्वजनिक प्रदर्शन आराधनालय में था, और शक्ति का यह बहुत ही निजी प्रदर्शन घर में था।

और फिर, गलील के पूरे शहर में शक्ति का सार्वजनिक प्रदर्शन। और अचानक, वे यीशु को नहीं ढूँढ़ पाते। वे उसे ढूँढ़ने निकल पड़ते हैं।

मुझे लगता है कि थोड़ी सी गलतफहमी की झलक दिखने लगी है। शिष्यों की एक खासियत यह है कि वे समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या हो रहा है। इसलिए, शमौन और उसके साथी उसे ढूँढ़ने गए और जब उन्होंने उसे पाया तो उन्होंने कहा, सब लोग तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं।

यहाँ ध्यान दें, इस वार्तालाप में, जिस पर मार्क प्रकाश डाल रहा है, शिष्यों की ओर से यीशु को एक तरह की फटकार है। उसे वहाँ नहीं होना चाहिए था। उसे एकांत जगह पर नहीं जाना चाहिए था।

उसे अकेले प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। उसे उपचार करना चाहिए। उसे दुष्टात्माओं को निकालना चाहिए।

उसे उन सभी लोगों के साथ होना चाहिए जो आए हैं। उसके लिए सांस्कृतिक अपेक्षा यह रही होगी कि वह आने वाले सभी लोगों का स्वागत करे। इसलिए, यहाँ एक फटकार है कि किसी तरह यीशु ने एक गलत निर्णय लिया है।

यह तो बस एक फटकार का संकेत है। लेकिन यीशु ने गायब होकर कुछ ऐसा किया है जो उसे नहीं करना चाहिए था। क्यों? क्योंकि हर कोई आपको ढूँढ रहा है।

मैं इस बात की ओर इशारा करता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह दर्शाता है कि साइमन और उसके साथी, और यह साइमन और शिष्य, साइमन और बारह, आपको यह चित्रण बहुत मिलेगा जहाँ साइमन बराबरी के लोगों में प्रथम है। वह मुखपत्र है, आवाज़ है, प्रवक्ता है, अगर आप कहें तो, बाकी सब क्या सोच रहे हैं। वह समूह का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

हम मार्क में इस बात को पूरी तरह से देखेंगे। साइमन और बाकी लोगों को लगता है कि यीशु का वहाँ होना गलत है। अब हम मार्क के सुसमाचार में इस विचार को जारी रखेंगे।

जहाँ यीशु कुछ करेंगे, और शिष्य इससे भ्रमित होंगे, और वे यह भी कहेंगे कि यीशु गलत हैं। बेशक, मार्क 8 में महान स्वीकारोक्ति पर आते हैं, जहाँ यीशु कौन हैं इसकी घोषणा और फिर उसका दुख और मृत्यु से जुड़ाव कुछ ऐसा है जिसे शिष्यों को स्वीकार करने में कठिनाई होती है। हर कोई आपको ढूँढ रहा है।

यीशु ने उत्तर दिया, " चलो हम कहीं और चलें, पास के गाँवों में, ताकि मैं वहाँ भी प्रचार कर सकूँ। इसीलिए मैं आया हूँ। क्या यह आयत 38 में दिलचस्प नहीं है? हर कोई तुम्हें ढूँढ रहा है, इसका उत्तर यह है कि मुझे कहीं और जाना है।

यह बात विरोधाभासी लगती है। लेकिन यीशु प्रार्थना कर रहे थे। उन्होंने खुद को दूर खींच लिया था।

वह प्रार्थना कर रहा था। और मेरा मानना है कि उस प्रार्थना ने उसे इस निर्णय पर पहुँचाया कि अब कहीं और जाने का समय आ गया है। ठीक उसी तरह जैसे प्रस्तावना में भी, मार्क ने बताया कि कैसे आत्मा ने उसे जंगल में ले जाया।

ऐसा लगता है कि यीशु किसी मिशन का अनुसरण कर रहे हैं। वे आज्ञाकारी हैं। वे इस महान अधिकार के अधिकारी हैं।

वह प्रार्थना करता है, और फिर आज्ञा का पालन करता है। यह विडंबना है, अगर आप चाहें। और जो सबसे तार्किक बात लगती है वह है वहीं रहना क्योंकि लोग जानते हैं कि आप कहां हैं और हर कोई यहां आ रहा है।

यीशु ने जवाब दिया, " हाँ , यही समस्या है। मुझे कहीं और जाना है। क्यों? ताकि मैं वहाँ भी प्रचार कर सकूँ।"

इसीलिए मैं आया हूँ। अब, इसीलिए मैं आया हूँ, इस मंत्रालय के इस भाग के बारे में बात करते हुए। याद रखें, वह जो उपदेश दे रहा था वह था पश्चाताप करो और विश्वास करो कि परमेश्वर का राज्य आ गया है।

मार्क हमें बताता है कि वह जो प्रचार कर रहा है, वह परमेश्वर की खुशखबरी है। वह यह घोषणा करने आया है कि राज्य आ गया है। और इसलिए, मार्क ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, इसलिए उसने पूरे गलील की यात्रा की। यह एक सारांश कथन है, उनके आराधनालयों में प्रचार करना और दुष्टात्माओं को निकालना।

तो, तीन चीजें जो इस दिन की विशेषता थीं, जो उपदेश और चमत्कारी कार्य थे। उपदेश कि राज्य आ गया है। उपदेश, अगर हम समझते हैं कि आराधनालय की प्रक्रिया एक पाठ से कैसे होती होगी।

विचार यह है कि मसीह जिस भी पाठ पर टिप्पणी कर रहे थे, वह यह प्रचार करने में सक्षम थे कि राज्य आ गया है। उन्होंने जो उपदेश दिया उसका संदेश परमेश्वर का शुभ समाचार था। और यदि वह आराधनालय में होते, तो वह उस पाठ से ऐसा कर रहे होते जिस पर वह टिप्पणी कर रहे थे।

तो, यह विचार है, बेशक, जिसे मैथ्यू उठाता है, आप जानते हैं, यीशु कहते हैं कि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पूर्ति, कि सभी शास्त्र किसी न किसी तरह से राज्य के आगमन और पश्चाताप और विश्वास की ओर इशारा कर रहे थे। और इसलिए, हमारे पास शिक्षा और उपदेश हैं, और हमारे पास दुष्टात्माओं को भगाना है, हमारे पास चमत्कारी कार्य हैं। तो, इस दिन के साथ, श्लोक 21 से 39 पर ध्यान दें।

इस दिन के साथ, मार्क ने अनिवार्य रूप से अपने सुसमाचार की शुरुआत की है। प्रस्तावना ने कुछ विषयों को पेश किया और शिष्यों के बुलावे ने सार्वजनिक मंत्रालय की शुरुआत की। लेकिन सुसमाचार का मूल, मेरा मतलब है कि मार्क जो कहानी बता रहा है, वह इस एक दिन से जुड़ी हुई है।

क्योंकि उसने पूरी कहानी को इस एक दिन तक धीमा कर दिया है। तो, हमें इससे क्या लेना चाहिए? मार्क के सुसमाचार की हमारी बाकी कहानी के बारे में हमें क्या उम्मीद करनी चाहिए? खैर, मुझे लगता है कि पहली बात जो हमें देखनी है वह यह है कि यह संघर्ष की कहानी होगी। हम यीशु को धार्मिक नेताओं के साथ, विशेष रूप से धर्मग्रंथों और ईश्वर की इच्छा के इरादे के मामलों में असहमत पाएंगे।

हम यीशु को शैतानी ताकतों के साथ युद्ध में शत्रुता करते हुए देखेंगे। यह प्रस्तुत किया गया है। आपके पास यह चित्र है कि एक तरफ यीशु हैं, और दूसरी तरफ शैतान और धार्मिक नेता हैं।

यीशु को अस्वीकार करने और उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया के कारण वे एक तरफ़ इकट्ठे हो रहे हैं। विडंबना यह है कि बाद में मार्क में, हम देखेंगे कि धार्मिक नेता यीशु पर राक्षसों के साथ होने का आरोप लगाते हैं। हम इस पर चर्चा करेंगे।

लेकिन मार्क जिस तरह से प्रस्तुत कर रहे हैं, वह यह है कि दो समूह हैं और ऐसे शिष्य हैं जो यीशु का अनुसरण कर रहे हैं, लेकिन फिर भी प्रभावी रूप से ऐसा नहीं कर रहे हैं। हमने कुछ व्याख्यानों में बताया था कि कैसे मार्क का शिष्यों के बारे में सबसे कठोर दृष्टिकोण है। कि शिष्यों को नियमित रूप से अपूर्ण और दोषपूर्ण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

यहां तक कि मत्ती और लूका की तुलना में अंत में उनकी पुनर्स्थापना भी नहीं हुई। और हम इसे पहले दिन में भी प्रस्तुत कर रहे हैं। कैसे वे ठीक से नहीं समझ पाते कि यीशु क्या करने आया है।

उन्हें यीशु पर पूरा भरोसा नहीं है क्योंकि किसी तरह उन्हें लगता है कि उसने गलत निर्णय लिया है। और हमें भीड़ भी मिल रही है। और सवाल यह बनने जा रहा है, वह सवाल जो हमें थोड़ा परेशान करेगा, वह यह है कि भीड़ और शिष्यों के बीच क्या अंतर है, क्या विशिष्ट विशिष्टताएँ हैं? वे कैसे भिन्न हैं? और हम पाएंगे कि उनमें बहुत ज़्यादा अंतर नहीं है।

उनके बीच बहुत सी समानताएँ हैं। कुछ बुनियादी अंतर हैं, और हम उन्हें सामने आने देंगे। लेकिन हम देखेंगे कि उनके बीच बहुत सी समानताएँ हैं।

और फिर आखिरी बात यह है कि यीशु की सेवकाई एक गतिशील सेवकाई है। और मार्क, वह लगातार गतिशील रहता है। वह आराधनालयों और घरों में घूमता रहता है।

हम घरों में बहुत सी चीजें घटित होते देखेंगे। मार्क के सुसमाचार में घरों में बहुत सी घटनाएँ घटित होती हैं। मुझे लगता है कि इसके बारे में सोचना शानदार है।

लेकिन यीशु की सेवकाई एक चलती-फिरती सेवकाई थी। वह एक घुमक्कड़ सेवक था। वह एक जगह पर नहीं रुका।

वह लगातार एक जगह से दूसरी जगह जा रहा था; हम उसे यहूदी भूमि से लेकर गैर-यहूदी क्षेत्रों तक जाते देखेंगे। हम उसे तट पार करते और लंबी दूरी तक चलते देखेंगे, अक्सर राजनीतिक कारणों से, जैसा कि हम सोचते हैं जब तक कि वह यरूशलेम की ओर मुड़ता नहीं है।

तो, जब हम मार्क के सुसमाचार में आगे बढ़ना शुरू करते हैं, और मैं यहीं समाप्त करूँगा। जब हम मार्क के सुसमाचार में आगे बढ़ना शुरू करते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि हम इस पहले दिन पर वापस लौटें। और कैसे मार्क ने हमें अन्य पहलुओं को समझने के लिए तैयार किया है, विशेष रूप से पहले आठ अध्यायों में यीशु की सार्वजनिक सेवकाई, कफरनहूम में इस पहले दिन के आधार पर।

जब उसने अधिकार के साथ बात की और कोमलता से व्यवहार किया। हम अपने अगले पाठ में मार्क 2 को देखना शुरू करेंगे। धन्यवाद।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क की पुस्तक पर दिया गया शिक्षण है। यह मार्क 1:14-39 पर सत्र 3 है।